B.A. (Hons) Part III (1)
Philosophy - Paper VII
Topic Theory of Sentence.

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept of Philosophy
R.R.S. College, Mokama

भाषा का व्यक्ति के जीवन में अत्यंत महत्व है क्योंकि इसी आधार पर यह संभव है कि व्यक्ति मौखिक या लिखित रूप में अपने मन में निहित विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त कर सके। यह साधन किसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावों एवं विचारों को बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त करता है को भाषा कहा जाता है और भाषा की सबसे छोटी ~~इकाई~~ एवं सार्थक इकाई वाक्य होती है। वाक्य के संबंध में जानकारी प्राप्त करते समय मुख्यतः दो समस्याओं का सामना करना पड़ता है

(i) उद्देश्य एवं विधेय के मध्य संबंध का स्वरूप कैसा है?
(ii) उद्देश्य वाक्य के विधेय गुण आदि में से किससे संबद्ध है?

उपरोक्त दोनों समस्याओं के विश्लेषण हेतु कुछ सिद्धांतों का निर्माण किया गया है जिन्हें वाक्य के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। वाक्य के अर्थ से संबंधित प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं

(1) नामवादी सिद्धांत - इस सिद्धांत के पुरस्कर्ता हॉब्स हैं। उनका कहना है कि दो नामों के

संबंध को प्रत्येक पक्ष अभिव्यक्त करता है। वाक्य का आशय बोलनेवाले व्यक्ति के इस विश्वास पर आधारित है कि विधेय एवं उद्देश्य एक ही हों। नामवादी सिद्धान्त का दोष यह है कि इसके अनुसार सत्य मात्र आकारगत परीलक्षित होता है।

(2) धारणावादी सिद्धान्त – इसके प्रतिपादक लॉक हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक वाक्य दो अवधारणाओं को अभिव्यक्त करता है। इस सिद्धान्त में इस तथ्य की अवहेलना की गई है कि किसी वस्तु में भाव निहित होता है।

(3) गुणवादी सिद्धान्त :– गुणवादी सिद्धान्त उद्देश्य एवं विधेय को गुणवाचकता के अर्थ में स्वीकार करता है।

(4) विधानवादी सिद्धान्त – इस सिद्धान्त के प्रवर्तक मार्टिन एवं बैन हैं। विधानवाद के सिद्धान्त से हमें ज्ञात होता है कि वाक्य का उद्देश्य वस्तुवाचक होता है और उसका गुण विधेय होता है।

(5) वस्तुवाचकता का सिद्धान्त :– इस सिद्धान्त के अनुसार वाक्य के दोनों पदों (उद्देश्य एवं विधेय) का आशय वस्तुवाचकता में निहित होता है। इस सिद्धान्त के द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि वाक्य का उद्देश्य क्या है?

(6) निर्देश गुणात्मक मत – इस सिद्धान्त के अनुसार वाक्य के अर्थ को गुणवाचकता एवं वस्तुवाचकता में भी स्पष्ट किया जा सकता है। इस सिद्धान्त के प्रवर्तक हैमिल्टन थे।